श्री लक्ष्मण जी की आरती

आरती लक्ष्मण बालजती की |

असुर संहारन प्राणपति की ||

जगमग ज्योति अवधपुर राजे |

शेषाचल पै आप विराजे ||

घंटा ताल पखावज बाजे |

कोटि देव मुनि आरती साजे ||

किरीट मुकुट कर धनुष विराजे |

तीन लोक जाकी शोभा राजे ||

कंचन थार कपूर सुहाई |

आरती करत सुमित्रा माई ||

आरती कीजे हरी की तैसी |

ध्रुव प्रहलाद विभीषण जैसी ||

प्रेम मगन होय आरती गावै |

बसि वैकुण्ठ बहुरि नहीं आवै ||

भक्ति हेतु हरि ध्यान लगावै |

जन घनश्याम परमपद पावै ||

आरती लक्ष्मण बालजती की |

असुर संहारन प्राणपति की ||